International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume IV, Issue V, October 2017 Available online at: www.ijaur.com

पिछड़ा वर्ग की व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन

रामगरीब पटेल
अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी)
महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश–
भारत देश को स्वतंत्र हुये आज लगभग 70 वर्ष हो गये हैं। आज हम देखते हैं कि देश के अधिकांश युवक देश के प्राचीन गौरव की गाथा गाते रहकर अपनी छाती ठोकते रहते हैं। वह कहते हैं कि प्राचीन काल में हमारा देश धन–धान्य से भरपूर था। विश्व में इसकी पहचान सोने की चिड़िया के नाम से की जाती थी। शिक्षा के क्षेत्र में तक्षशिला और नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों में विदेशों के हजारों छात्र प्रवेश पाने के लिये आते थे, जिनको प्रवेश मिल जाता था वे अपने को भाग्यशाली समझते थे। धर्म और आध्यात्म के क्षेत्र में यह देश विश्वगुरू माना जाता था। इस देश में जन्म लेने के लिये देवता भी तरसते थे। लेकिन आज उसी देश की यह स्थिति है कि बताते हुये शर्म आती है। देश की विश्व के निर्धन देशों में गिनती की जाती है, जहाँ हजारों लोग निर्धनता के कारण आत्म हत्यायें कर रहे हैं, हर प्रकार के भ्रष्टाचारों, करोड़ों के अनेक घुटाले, नारी हिंसा, चोरियाँ, डकैतियाँ, आतंकवादी गतिविधियों के समाचारों से समाचार पत्र भरे पड़े रहते हैं। लेकिन मेरे विचार से जब तक पिछड़ा वर्ग को बचपन से उद्देश्यपूर्ण शिक्षा, उत्तम वातावरण, संस्कृति नहीं मिलेगी, तब तक कितनी ही फौज की व्यवस्था करते जायें देश की दुर्दशा में सुधार नहीं होगा, लेकिन शासन–प्रशासन शिक्षा तथा संस्कृति के बारे में अत्यधिक उदासीन है।

मुख्य शब्द – सामाजिक विकास, ज्ञान, शिक्षा एवं संस्कृति ।

प्रस्तावना –
व्यवसाय मानव जीवन का आधार है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में व्यवसाय परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी चलते थे। इसका निर्धारण जाति के आधार पर होता था, परन्तु आज औद्योगीकरण, नगरीकरण और विशेषीकरण के कारण व्यवसायिक स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। व्यवसाय के द्वारा ही आज व्यक्ति के सामाजिक प्रस्थित का निर्धारण किया जाता है।
गणतंत्र भारत का संविधान अपने नागरिकों को वे सब अवसर एवं अधिकार प्रदान करता है जो कल्याणकारी राज्य के आधार पर निहित होते हैं। विधि के संदर्भ में संविधान शब्द का तात्पर्य उस प्रलेख से है जो किसी राष्ट्र की निमित्त सरकार व प्रशासन के मूलभूत अंकों का स्थापित करता है, जो उनके स्वरूप, उनकी संरचना, उनकी शक्तियों व उनके मुख्य कार्यों का रूप प्रस्तुत करता है। अतः संविधान उन सभी नियमों को अपने में समाहित किये हुये हैं, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी राज्य की संप्रभुत्व शक्तियों के कार्यान्वयन अथवा उनके वितरण को प्रभावित करते हैं। संविधान को इस प्रकार उन सिद्धान्तों, नियमों, परम्पराओं, विधि व्यवस्थाओं का संकलन माना जा सकता है, जो किसी राष्ट्र के सरकारी तंत्र को सुचारू रूप से चलाने के आवश्यक होता है।

विश्लेषण –
पिछड़ा वर्ग समाज आज भी ज्यादातर कृषि प्रधान है। कृषि के द्वारा ही व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण आर्थिक क्रियाओं का संचालन करता है, वहीं कुछ व्यक्ति अन्य व्यवसाय से भी जुड़े हुए हैं। पढ़े लिखे लोग नौकरी में जाने की अभिलाषा रखते हैं। इसके साथ ही सम्पन्न लोग कृषि के अलावा अन्य व्यवसाय से भी जुड़ने लगे हैं। मगर उनका औसत बहुत कम है। रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड के पांच गाँव क्रमशः टिकुरी 32, घोपी, पहरखा, रजहा एवं रमपुरवा में कुल 300 लोगों को सम्मिलित कर उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति निम्न सारणी में प्रदर्शित की गयी है –

सारणी क्रमांक–1
व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.	व्यवसायिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1.	व्यवसाय	69	23
2.	नौकरी	30	10
3.	मजदूरी एवं कृषि	156	52
4.	अन्य	45	15
	योग	300	100

उपरोक्त सरणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 52 प्रतिशत उत्तरदाता मजदूरी एवं कृषि करते हैं। 10 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी, 23 प्रतिशत व्यवसाय व 15 प्रतिशत अन्य कार्य करते हैं। तथ्यों के विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि कृषि कार्य करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या सबसे अधिक है।

सारणी क्रमांक–2
उत्तरदाताओं द्वारा किए गये व्यवसाय से खर्च की पूर्ति

क्र.	उत्तरदाताओं का विवरण	हाँ		नहीं		योग
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1	उच्चवर्गीय	75	75	25	25	100
2	मध्यमवर्गीय	30	30	70	70	100
3	निम्नवर्गीय	10	10	90	90	100
	योग					300

शोधार्थी द्वारा उच्चवर्गीय पिछड़ा वर्ग से पूछे जाने पर कि जिस व्यवसाय को आपने अपना रखा है क्या उससे आपका खर्च पूरा हो जाता है। 75 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग ने कहा कि हाँ उनका खर्चा अपनाये गये व्यवसाय से पूरा हो जाता है। 25 प्रतिशत ने बताया कि उनका खर्चा अपनाए गए व्यवसाय से पूरा नहीं हो पाता है। मध्यमवर्गीय पिछड़ा वर्ग में से 30 प्रतिशत ने बताया कि उनका खर्चा अपनाये गये व्यवसाय से पूरा हो जाता है। जबकि 70 प्रतिशत ने बताया कि उनका खर्चा पूरा नहीं हो पाता है। निम्नवर्गीय पिछड़ा वर्ग से ये प्रश्न पूछे जाने पर कि उनका खर्चा अपनाये गए व्यवसाय से पूरा हो जाता है 10 प्रतिशत ने हाँ कहा जबकि 90 प्रतिशत ने कहा कि नहीं। अपनाए गए व्यवसाय से उनका खर्चा पूरा नहीं होता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृषि ही एक प्रमुख आधार है जिससे पारिवारिक व्यवस्था का संचालन होता है, पर्याप्त आय न होने के कारण वे अन्य कार्यों जैसे उच्च शिक्षा आदि प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। कृषि ही ऐसा कार्य है जो स्वयं या अन्य व्यक्तियों के यहाँ किया जाता है। जिन सदस्यों के पास पर्याप्त भूमि नहीं है वे सम्पन्न व्यक्तियों के यहाँ कृषि कार्य करके अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं। इस कारण कृषि कार्य करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत ज्यादा है।

संदर्भ –

1. ऐज–केयर इण्डिया, द्वारा आयोजित, सर्वेक्षण, अक्टूबर 23, 1989.
2. बघेली भाषा–साहित्य, सम्पादक, प्रतिभा चतुर्वेदी, वर्ष 2009
3. बद्येल डी.एस., सामाजिक अनुसन्धान, साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा–1999
4. महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन, प्रो. सत्यमूर्ति, अरुण प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2000
5. महाजन, धर्मवीर, भारत में समाज, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2004
6. पाण्डेय एस.एस., कृषकों में वैज्ञानिक कृषि विचारकों का सम्प्रेषण, 1976
7. रीवा : सांख्यकीय पुस्तिका, जनसम्पर्क विभाग, वर्ष 2012
8. शर्मा, श्रीराम, धर्मदर्शन, मथुरा प्रकाशन, 1990
9. शर्मा, श्रीराम, समाज निर्माण के विभिन्न चरण, मथुरा प्रकाशन, वर्ष 2000
10. सक्सेना आर.एन., भारतीय समाज तथा सामाजिक संस्थाएँ, पृ. 99
11. सचदेव, डी.आर, भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब इलाहाबाद, वर्ष 2002.
12. दुबे, श्यामाचरण, मानव एवं संस्कृति, वर्ष 2010
13. देऊर कोठार, विन्ध्य प्रदेश का बौद्धकालीन गौरव, डॉ. (इंजी.), साकेत वर्धन बौद्ध, सम्यक, प्रकाशक, प्रथम संस्करण, वर्ष 2010
14. आर. दत्त एण्ड सुन्दरम, कृषकों में वैज्ञानिक कृषि विचारकों का सम्प्रेषण, 1976
15. ओलिव बैक्स–दि सोसियोलाजी आफ एजुकेशन, न्यूयार्क, वर्ष 2008
16. गौरवपूर्ण इतिहास का प्रतीक बांधवगढ़, स्मारिका शताब्दी समारोह, 1983, ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, डॉ. अजयशंकर पाण्डेय.
17. गोर्गी (आलेख), इतिहास अनुशीलन, अंक 06, डॉ. राधेशरण अनंत, वर्ष 2007.
18. गुलाम गीरी, रचनाकार, जोतिवाराव फूले, अनुवादक डॉ. विमल कीर्ति, वर्ष 2011.